[सभी कालों की प्रवृत्तियाँ]

* आदिकाल *

1. आश्रयदाताओं की प्रशंसा

2. वीर रस की प्रधानता

3. शृंगार रस का पुट.

4. रासो काव्य परम्परा

5. कल्पना की प्रचुरता

6. प्रबन्ध एवं मुक्तक काव्यों की रचना

7. राष्ट्रीयता का अभाव

{भक्तिकाल}

1. भक्ति की प्रधानता

2. समन्वय की भावना

3. भारतीय संस्कृति की रक्षा

4. गुरु की महत्ता

5. शृंगार एवं शाँत रस की प्रधानता

Scanned by TapScanner

(निर्गुण भक्ति काव्यधारा)
↓
[ज्ञानाश्रयी शाखा]

1. ईश्वर के निराकार रूप की उपासना

2. गुरु की महत्ता एवं बाह्याडम्बरों का खण्डन।

3. प्रतीकात्मकता एवं उपदेशात्मकता

4. रहस्य-भावना की प्रधानता।

5. समाज-सुधार।

[प्रेमाश्रयी शाखा]

1. गुरु की महत्ता

2. प्रेमकथाओं का चित्रण

3. मसनवी शैली का प्रयोग

4. सूफी सिद्धान्तों का प्रयोग

5. प्रतीकात्मकता

6. शृंगारिक वर्णन

Scanned by TapScanner

(सगुण भाक्ति काव्यधारा)

↓

[रामाश्रयी शाखा]

1. राम के चरित्र का गायन

2. सेवक - सेव्य भाव की भाक्ति

3. लोक मंगल/कल्याण की भावना

4. समन्वय की विराट भावना

5. दार्शनिकता। GyanSindhu C.C.

[कृष्णाश्रयी शाखा]

1. कृष्णलीला का चित्रण

2. वात्सल्य एवं शृंगार रस की प्रधानता

3. सख्यभात की भाक्ति / प्रकृति चित्रण।

4. संगीतात्मकता एवं दार्शनिकता।

Scanned by TapScanner

(रीतिकाल)

1. रीति निरूपण

2. श्रृंगारिकता

Gyan Sindhu C.C.

3. राज प्रशस्ति

4. भक्ति एवं नीति की प्रवृत्ति

5. नायक-नायिका भेद

6. मुक्तक काव्य रचना।

Join Telegram Chan

{आधुनिककाल}

+ भारतेन्दु युग +

1. देश-प्रेम की भावना

2. बौद्धिकता तथा नवीनता

3. प्रतीकों का प्रयोग

4. जनजीवन का चित्रण

5. विविध काव्यधाराओं का विकास

6. प्रेम एवं श्रृंगारिकता

YouTube Gyansindhu Coaching Classes

Scanned by TapScanner

[द्विवेदी युग]

1. हास्य व्यंग्य का पुट

2. नीति और आदर्श

3. खड़ीबोली को प्रधानता

4. विभिन्न काव्य शैलियाँ हैं

5. कथात्मकता।

GyanSindhu CC

6. राष्ट्रीयता एवं मानवतावादी दृष्टिकोण

(छायावादी युग)

1. रहस्यवादी भावना

2. व्यक्तिवाद की प्रधानता

3. प्रेम एवं शृंगारिकता, वेदना तथा निराशा

4. प्रकृतिका मानवीकरण

GyanSindhu CC

5. राष्ट्रीय प्रेम प्रतीकात्मकता।

Scanned by TapScanner

(छायावादोत्तर युग)

↓

[प्रगतिवादी युग]

1. परम्परा का विरोध

2. शोषकों के प्रति घृणा

3. क्रान्ति की भावना

4. मानवतावाद

Gyan Sindhu CC

(प्रयोगवादी युग)

1. व्यक्तिवाद

2. अति बौद्धिकता

3. उपमानों एवं प्रतीकों की नवीनता

4. नये-नये प्रतीकों का प्रयोग

5. दमित वासनाओं की अभिव्यक्ति।

Scanned by TapScanner